वेदों की खुशबू ओ३म् वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 90	Year 10	Volume 8	September 2020 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 150

संत कौन है

श्री कृष्ण गीता में कहतें हैं———हे अर्जुन, मैं सब प्राणियों में स्वभाव से व्यापक हू। न मेरा कोई प्रिय है न ही अप्रिय। परन्तु जो मुझे प्रेम करते हैं, मैं उन में निवास करता हूं। संत वही है जिस में भगवान निवास करते है। इस लिये संत जो भी कार्य करता है वह श्रेष्ठ व सब को सुखकारी होता है, मानों जैसे भगवान ने ही वह कार्य किया हो। संत कें कार्य तो ऐसे होते हैं जो कि दुष्टों का भी उनकी वृतियां सुधार कर उनका उद्धार करते हैं। संत और साधारण मनुष्य में एक बड़ा फर्क यह है कि मनुष्य तो अपने प्राणों के लिये अपने सिद्धांत छोड़ सकता है परन्तु संत चाहे प्राण भी चले जायें अपने सिद्धान्तों को नहीं छोड़ता।

संतो को उन की बाहरी क्रियाओं द्वारा पहचानना , आपको धाखा भी दे सकता है। हम में बहुत से उन में चमतकारिक गुण देखना चाहते हैं जो कि हमारा अज्ञान है और अक्सर धोखे का कारण बनता है। संतों की पहचान तो बहुत सीधी है। जिस व्यक्ति के संग से हमारा अचरण अच्छा बनने लगे, जिसकी संगत में आने से हमें हमारी

Contact:
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2018-2021

कमियों का आभास होने लगे और हम काम, क्रोद्ध, लोभ, मोह, अंहकार, बुरे आचरण से दूर होने लगें और हम में विनम्रता, करूणा, धैर्य, संतोष, सत्य न्यायपूर्ण आचरण जैसे गुण आने लगें, सच्चे ईश्वर की पहचान होने लगे और उस में विश्वास बड़ने लगे, वही संत है।

सब से बड़ी बात संत कभी भी यह नहीं चाहेगा कि उसके अनुयाई उसका नाम लेना शुरू कर दें। सच्चा संत तो महर्षि दयानन्द की तरह सच्चे ईश्वर के ध्यान करने का ही उपदेश देता है। वह समय आने पर अपनी सेवा तो करवा सकता है परन्तु अपनी पूजा नहीं। सन्त यह कोशिश करता है कि जहां तक हो सके वह किसी से भी सेवा न करवाये व अपने काम सवयं करे। और अगर सेवा करवानी पड़ ही जाती है तो दूसरे को कम से कम कष्ट हो और सेवा करने वाला सेवा खुश हो कर करे। वह अपने शरीर को ढकने के लिये कपड़े तो ले परन्तु यदि कीमती आभूषण आदि लेता है तो वह सन्त नहीं कारण विलास और भोगों के लिये वैराग्य का होना सन्त में बहुत आवश्यक है।

मुझे याद आता है हमारे शिमला आर्य समाज के समय में वहां आर्य बाल सभा को प्रारम्भ करने वाले एक ब्रहमचारी होते थे। यह बात 1960 की है। हमारे परिवार में उनका आना जाना था। मेरे लिये तो वह संत ही थे कयोंकि मैने उनको पैसा ईकठा करते नहीं देखा। यह जानते हुये कि उनका गुजारा तो दक्षिणा से ही चल सकता है जब मझे मिलते तो में भी उनके पेरों पर कुछ दक्षिणा रख देता। जब वह 75 के करीब हुये तो उनहोने पंजाब में एक कुटिया बनाने की बात की। यह उनकी आवश्यकता थी तो हमारे शिमला के ही एक आर्य समाजी परिवार ने उन्हें बड़ी राशी दी और जो बाकी श्रधालुओं से हुआ उन्होने भी दी, और उनकी कुटिया बन गई। उसके पांच साल बाद वह फिर हमारे पास आये और बोले ———भारतेन्दु , मेरे बजुर्गो की जमीन का एक बड़ा टुकडा मेरे हिस्से में आया है, मै चाहता हूं कि उसके चारों और दीवार बनवा दूं ताकि वह सुरक्षित रहे, जो आप से हो सके इस काम के लिये कुछ दे दें। मैने सोचा और कह दिया, माफ कीजिये मैं कुछ नहीं दूंगा जो कि शायद उनको बुरा भी लगा। मैने इस लिये इन्कार कर दिया क्योकि यह उन की आवश्यकता न हो कर भौतिक वस्तओुं के साथ लगाव था, जो कि उनके जैसे संत के लिये ठीक नहीं था और बुढ़ापे में माया के रास्ते पर शायद पहला कदम था।

सब के लिये प्रेम व किसी के लिये भी द्वेश न होना संत की मुख्य पहचान है। इसके साथ ही उस के दिल में दया, करूणा, सत्य व न्यायपूर्ण मार्ग पर चलने का संकल्प होना चाहिये। वह स्वभाव से ही निर्पक्ष, सत्यमार्ग का पथिक व न्यायकारी होता है।

उसका ईश्वर से सम्बन्ध बहुत ही स्वार्थहीन होता है। वह अपने आप को ईश्वर में देखता है और ईश्वर को अपने में परन्तु ईश्वर का प्रयोग व्यवसाय के लिये नहीं करता। न ही ईश्वर के नाम पर लड़ता हे न ही ईश्वर के प्राणियों से घृणा करता है।

संत की एक और बड़ी पहचान यह होती है कि वह अपने आप को गरीबों में ही स्थान देना चाहता है। वह किसी बड़े राजनितिज्ञ या फिर अमीर व्यक्ति का आमन्त्रण नहीं ढूंढता है। वह गुरू नानक देव की तरह गरीब लालों का खाना अमीर भोगों की अपेक्षा पसन्द करता है।

एक बार शिष्य ने उत्सुकतावत अपने गुरू से पूछा———गुरूदेव संत और आम मनुष्य में क्या फर्क होता है। संत ने सोचा और फिर बोले———मेरे गुरू कहीं दूसरे शहर में जाने लगे, रेलवे स्टेशन पर खिड़की के सामने पक्ति में टिकट के लिये खड़े थे , तभी वहां एक भिखारिन आई, विपदा और अभावग्रस्तता उसके चेहरे पर झलक

CONTINUE PAGE 4

कृप्या ध्यान दे ।

हम आपको लोकडाउन व दूसरे कारणों से वैदिक थोट्स के चार संस्करण आप तक नहीं पहुंचा सके। हमें खेद है। आपको इन चार महीनों का खुलक नहीं देना है। इस कारण जिन का शुल्क आया हुआ है व जनवरी २०२० से ओं तक था वह चार महीने आगे तक माना जायेगा। उदाहरण के लिये अगर शुल्क फरवरी २०२० तक था जो अ बवह जून २०२० तक होगा। धन्याबाद।

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 150 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।
या **Google Pay No. 9217970381** या **Paytm No. 9958884557**

रही थी और हाथ जोड़ कर एक अच्छे अमीर व्यक्ति से बोली———सेठजी, मेरे दोनो बच्चे कई दिनों से भूखे हैं और ठंड से ठिठुर रहे हैं, कुछ सहायता कर दी जिए। परन्तु उस व्यक्ति ने मुंह फेर लिया, मेरे गुरू देव पिछे पक्ति में खड़े सब सुन रहे थे। उन्होने तुरन्त जो थोड़े टिकट के पैसे और सफर के लिये कम्बल उन के पास था, उस भिखारिन को दे दिया और स्वयं अपने गन्तव्य के लिये पैदल ही चले गये। रास्ते मे जब पैसे की आवश्यकता पड़ी तो समान आदि ढो कर अपनी आवश्यकता पूरी की परन्तु भीख नहीं मांगी। महात्मा हंसराज भी ऐसे ही संत थे। उनके जीवन की असंखय घटनाये ऐसे कामों से भरी हुई है।

संत हर युग में होते हैं, अवश्य नहीं गेरूए कपड़े पहनने वाले ही संत होते हैं। व्यापारी, न्यायधीश, किसी प्रशासनिक कार्य लगे हुये अधिकारी, अध्यापक यहां तक कि छोटे व्यवसाय का व्यक्ति भी संत हो सकता है यदि उस में संतों वाले गुण हैं। संत बनने का सबसे असान ढंग है कि मनुष्य को अपने कार्य करते रहना चाहिये पर मन भगवान में रहे। इस से सब से बड़ा फायदा यह है कि उसके कार्यो में पवित्रता रहेगी। वह पाप पूर्ण और गलत कार्य करने से बचा रहेगा। यही फर्क है जिस व्यक्ति का ध्यान मालिक में हर समय होता है और जो मालिक से दूर रहता है। जो हम कार्य का रहें है उन में पवित्रता और शुद्धि ही व्यक्ति के मन से प्रसन्नता देती है और उसे पाप से दूर रखती है, यही संत के गुण है।

जब आप को कोई संत लगे तो उस कि संगती प्राप्त करने की कोशिश करें और जब यह लगे कि संत तो अपने मार्ग से पथ भ्रष्ठ हो रहा है, उसकी संगत छोड दे। यह अवश्य नहीं कि मनुष्य पहले संत था तो सारी आयु संत ही रहेगा और पहले ठीक आचरण का नहीं था तो संत नहीं बन सकता । महात्मा श्रद्धानन्द का पहले आचरण अच्छा नहीं था परन्तु महर्षि दयानन्द के सपंर्क में आने से और उनका अनुयाई बनने के बाद संत बन गये। यही नहीं वे महात्मा गांधी को महात्मा कहते थे परन्तु जब उनको लगा कि महात्मा गांधी के विचार अब संतो वाले नही, वह तो न्यायपूर्ण आचरण से भटक गये है, तो वह उन से अलग हो गये, यही मनुष्य को करना चाहिये।

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

We have bigger house, but smaller families.
Our house has a guestroom, but fewer guests.
More convenience, but less time.
We have more degrees, but less sense.
More knowledge, but less judgement.
More medicines, but less healthiness.
More experts, but more problems.
Internet and telephone have globally joined us to
The people we don't know or haven't met
But, have locally separated from the people
With whom we passed our childhood and are kin's.
We have been all the way to moon and back,
But have trouble in crossing the street to
Meet the new neighbor.
We have become long on quantity,
but short on quality.

H.H. Dalai Lama.

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

अच्छे कर्म ही क्यों

डा महेश विद्यालकांर

किसी गुरू के दो शिष्य थे। एक ने गुरू से प्रश्न पूछा—'' क्या आप पिछले जीवन के बारे में बता सकते हैं?'' गुरू ने कहा––'' हां, बता सकता हूं ।''

तभी दूसरे शिष्य ने पूछा ––'' क्या आप अगले जीवन के बारे में बता सकते हैं?'' गुरू ने कहा—'' हां, मैं अगले जन्म के बारे में भी बता सकता हूं ।'' उन्होने दोनो शिष्यों को समझाया——'' देखो, पिछले जीवन के आधार पर तो यह जीवन मिला है। यदि पिछले जीवन मे धर्म व पुण्य न किये होते, तो वर्तमान जीवन इतना सुखी सुन्दर व सब साधनों से सम्पन कैसे मिलता? इससे सिद्ध है कि पिछला जीवन सुन्दर श्रेष्ठ व पवित्र था।

इसी तरह वर्तमान जीवन, बुराइयों, दोषों, पाप, अधर्म से बचा हुआ है, तो निश्चित है कि अगले जीवन में अच्छी योनि प्राप्त होगी। और तुम जानते हो कि सब से उत्तम योनी मनुष्य योनी ही है। इस लिये अगर मैं बुराइयों, दोषों, पाप, अधर्म से बचा रहता हूं, तो मेरा सोचना है कि अगले जीवन में मैं मनुष्य योनी को ही प्राप्त हूंगा

करतार सिंह लेहरी
जिन्होंने कॉविड प्रभावित उन शवो का संस्कार किया जिनको लेने उनके परिवार जन नहीं आये

असंख्य जीव नाना योनियों में जो कर्मफल भोग रहे हैं, वह पुनर्जन्म का सबसे बड़ा प्रमाण है। पुनर्जन्म के कर्मफल के कारण असख्य जीव नरक भोग रहे हैं। धर्म–कर्म, दान– पुण्य, पूजापाठ आदि वर्तमान व अगले जन्म को सुधारने के लिये किये जाते हैं। पुनर्जन्म की भावना पर विश्वास करते हुए हमे वर्तमान जीवन को सँभालना, सुधारना और उंचा उठाना चाहिये। इसी में जीवन की सार्थकता और उपयोगिता है। जो प्राप्त जीवन को दुर्गणो, दुर्व्यसनो तथा गल्त कामों मे गुजारते हैं, वे अगले जन्मो में निकृष्ठ योनियों को प्राप्त करके जन्म जन्मांतरों तक दुखः, कष्ट, अभाव आदि में रहते है। अतः यह जन्म हमे अगले जीवन को सँभालने, सुधारने का अवसर देता है। अतः मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने हर कर्म की जांच करता हुआ जीवन यापन करें। कोई भी ऐसा कर्म करने से दूर रहे जिस में पाप का संशय हो। दूसरों के काम आना, खास कर जो हमारे जैसे भाग्यशाली नहीं हैं, निस्वार्थ सेवा में लगे रहना सब से बड़ा पुण्य है।

श्रेष्ठकर्म करते हुए जीने की इच्छा करना भारतीय जीवदर्शन है। ' कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविशेत' हे मनुष्यो ! पुरषार्थी और कर्मशील बनो। कर्मो से मनुष्य देवता बनता है, कर्मो से ही मनुष्य राक्षस बन जाता है। यह संसार कर्म की खेती है। जो जैसा बोता है वैसा काटता है। जैसा बीज वैसा फल। जैसी करनी वैसी भरनी। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु फल भोगने में परतन्त्र है। जीव कर्मानुसार जगत में आता है और उसी के अनुसार फल भोगकर चला जाता है। अकेला आता है और अकेला ही चला जाता है। जो इन्सान कर्म करता है, उसी के आधार पर जाति, आयु तथा भोग प्राप्त होते हैं।

जो संसार में नानात्व तथा वैविध्य नजर आता है, उसके मूल में जीव के कर्म ही है। एक समय में दो बालक जन्म लेते है–– एक राजमहल में दूसरा झोपड़ी में। कोई बुद्विमान है तो कोई बुद्विहीन। कोई साधनहीन है तो कोई सभी साधनो से सम्पत्र। कोई जन्म से ही सुखी है तो कोई जन्म से दुखः, कष्ट व पीड़ा उठा रहा है। **सूरदास की यह पंक्तियां बहुत शिक्षाप्रद हैं——**

उधो! क्रमन की गति न्यारी।

कर्म गति टारे नहीं टरे ।।

ससांर में अन्नत भोग योनियों का जाल बिछा है। नाली में पड़ा हुआ कीड़ा पूर्वजन्म के कर्मफल भोग रहा है। संसार के प्राणी र्कमफल के भेाग के प्रेरक उदाहरण है। **गीता कहती है————' कर्मणा गहना गति''** कर्मफल का रहस्य बड़ा गहन व विचित्र है। बड़े–बड़े ऋषि–मुनी–ज्ञानी भी इस रहस्य को समझ नहीं सके है। भगवान श्री कृष्ण का अमर संदशे है———' **अवश्यमेव भेक्तव्ये कृत कर्म शुभाशुभम**––जो कर्म मैने किये है या कर रहा हूं, उसका अच्छा बुरा फल मुझ को ही प्राप्त होगा। प्रभु की इस अटल न्याय–व्यवस्था में कोई पक्षपात तथा सिफारिश नहीं है। व्यक्ति अपने ही बुरे कर्मो से नरक भोगता है।

कोई किसी को स्वर्ग या नरक नहीं देता है। व्यक्ति उपने कर्म से ही उठता है तथा अपने कर्म से ही नीचे गिरता है। प्रभु की अदालत में कोई वकील, दलील या अपील नहीं चलती। उसकी मार में आवाज़ नहीं होती। प्रेरक कथन हमे सचेत कर रहा है,

कण– कण में बसा प्रभु देख रहा है।
चाहे पाप करो, चाहे पुण्य करो।।
कोई उसकी नज़र से बच न सका

इस लिये जिस तरह आज हम पानी वही पीना चाहते है जो कि फिलटर से निकला हो इसी तरह अपने कर्मो को भी आत्मा रूपी फिल्टर से छान कर ही करें। अर्थात जहां हमारी आत्मा यह आवाज देती है कि यह कार्य पाप है उसे न करें और जहां हमारी आत्मा की आवाज आती है कि इस काम को कर डालो उस में देर न करें। याद रखें अगर आप ईश्वर में विश्वास करते हैं और ईश्वर भक्ति में लीन है तो आपकी आत्मा अवश्य ही आपको अच्छे बुरे के बारे में सचेत करती रहती है।

पुस्तक

(English Book of short stories---Our Musings)

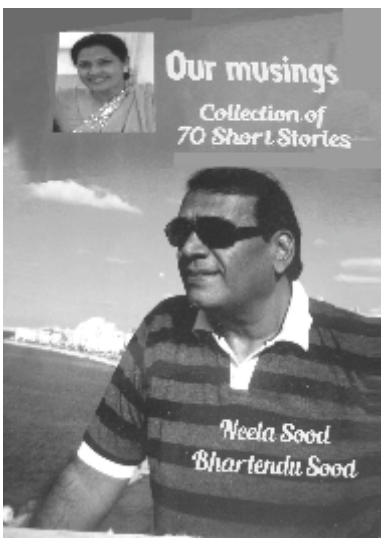

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी 70 छोटी कहानियों, जो कि अंग्रेजी समाचार पत्रों में समय समय पर प्रकाशित हुई हैं, का संग्रह एक पुस्तक में प्रकाशित किया है, जिसका नाम Our Musings है। इस पुस्तक की कीमत 150 रूपये है। जो भी इस पुस्तक को खरीदने का इच्छुक हो वह 100 रू भेजकर या हमारे बैंक ऐकाउंट में जमा करवा कर मंगवा सकता है। बैंक ऐकाउंट वही हैं जो कि वैदिक थोटस पत्रिका में दिये है। भेजने का खर्चा हमारा होगा।

कृपया निम्न बातों का ख्याल रखें,

पुस्तक ईगलिश भाषा में है।

पुस्तक केवल धार्मिक न हो कर जीवन के विभिन्न पहलुओं को छूती है

नीला सूद, भारतेन्दु सूद 9217970381

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

Health and Economy – The Twin Covid challenge

Dinesh Kumar Sud

Declaration of Covid 19 as Pandemic by WHO on 11th March 2020 posed a serious challenge to the world leaders. Confronted with Hobson's choice of either imposing a strict lock down to save lives and cause serious economic damage or down play the threat from virus and keep the economic activity going,different leaders responded to this conundrumdifferently.

- A country like India gave maximum importance to saving lives, at least in initial two phases of lock down, by enforcing what was arguably harshest in the whole world
- A country like Brazil played down the heath aspects, even terming the pandemic as nothing more than a flu, while keeping the economy less or more going with limited restrictions
- China, the culprit that exported Covid to other nations, had markedly different approach. China enforced very strict lock down in Hot Zones while enforcing a mild or no lock down in relatively safe areas.

The three approaches reflect the personality of three leaders at the helm of affairs –over confident Modi, heedless Bolsonaro and a shrewd Xi Jinping.

Now that pandemic has been with us for more than six months and GDP numbers of first quarter of 2020-21 are available, we can look back to see which strategy has proven to be least damaging.

As on date (12th September 2020), India, Brazil and USA have easily been the worst performers. For almost three weeks now, daily death toll in these three countries makes up more than 50% of total death toll of the whole world. India with cases touching almost 1 lakh per day and deaths over 1000 per day, has the dubious distinction of topping the charts for both categories for quite some time now. And India at least does not appear to be anywhere near the peak yet while trend for Brazil & USA is on a decline from peak.

Clearly, our strategy of "Lives First" has not been successful.

What about economic front?Let us examine data from seven most populous countries that make up slightly more than half of humanity.

GDP Apr to Jun 2020 of seven most populous countries

S. No.	Country	GDP growth (sorted on best to worst)
1.	China	3.2%
2.	Brazil	-1.0%
3.	Indonesia	-5.2%
4.	Nigeria	-6.1%
5.	USA	-9.1%
6.	Pakistan (estimated)	-9.5%
7.	India	-23.9%

India with -23.9% contraction is one of the worst, if not the worst, performer in the whole world.

India lost the battle on Health as well as Economic front. So, what went wrong with Indian strategy?Who in India willown up the responsibility for spreading the virus to hinter lands of India while depriving livelihood to millions and pushing an already tottering economy down the drain?

Chances are, that just like post Demonetization debacle, we will continue to be served with platitudes to cover the Covid fiasco. However, as responsible citizens, we should not stop asking questions from the government. This is all the more important today when opposition is demoralized and electronic media is largely pliant.

Mobile: 8850930138
F-7, Royal Oak Apartment,
Kaithu, Shimla -171003

The One who loves you will never leave you because even if there are 100 reasons to give up he or she will find one reason to hold on.

There is a big difference between a human being and being human. Only a few really understand it.

If you just want to Walk Fast, Walk Alone!
But if you want to Walk Far, Walk Together!

ईश्वर से प्यार करें, न कि भयभीत हो

कोई अगर आप को कहे कि आपके बच्चे आप से डरते हैं तो आप को कैसा लगेगा? मेरे ख्याल में आप दुखी ही होंगे। और अगर कोई कहे कि आपके बच्चे आप से प्यार करते हैं तो आप खुश ही होंगे। ईश्वर भी हमारा पिता है। इसलिये यह कहना कि मैं ईश्वर से डर कर रहता हू । I am a God fearing person ठीक नहीं जान पड़ता। मेरे ख्याल में कहने का अभिप्राय होता है कि मैं ईश्वर के न्याय से डरता हुआ कोई बुरा काम करने से डरता हूं।

फिर भी भय और प्यार एक दूसरे से उलट हैं । मनुष्य उसको प्यार नहीं कर सकता जिससे वह डरता है और जिस से वह प्यार करता है उससे डरता नहीं है। एक व्यक्ति से मैं इस बारे में चर्चा कर रहा था तो वह बोला——भय ईश्वर से नहीं उस के क्रोद्ध से लगता है ।यही नहीं बहुत से ईश्वर के क्रोद्धित रूप जिसे रूद्र भगवान भी कहा जाता है उस की पूजा करते हैं। यह तो ईश्वर का और भी अपमान है क्योंकि ईश्वर तो सच्चिदानन्द स्वरूप है और सब अवगुणों से उपर है तभी तो उसे भगवान कहा गया है जब कि क्रोद्ध तो बहुत बड़ा अवगुण है। भय वैसे भी एक नाकारात्मक गुण है न कि साकारात्मक जब कि प्यार एक साकारात्मक गुण है।

गुरूवर रविन्द्र नाथ टैगोर ने कहा था कि मैं ईश्वर से इस लिये बहुत प्यार करता हूं क्योंकि वह उनको भी उतना ही प्यार करता है जो उसकी सत्ता को नहीं मानते। ईश्वर उनको भी जीवन के सब साधन वायु, जल, अग्नि, फल , फूल वनस्पति वैसे ही दे रहा है जैसे कि वह उस की सत्ता को मानने वालों को दे रहा है। यह है ईश्वरीय गुण जिये हमें जीवन में अपनाना चाहिये।

जो व्यकित प्यार करता है वह खुलकर उस प्यार को जाहिर भी करता है । अक्सर हम सुनते है—प्यार किया तो डरना क्या ईश्वर भक्ति के गायन, भजन , पाठ , पूजा, हवन खुले वातावरण में किये जाते हैं और जो ईश्वर से डरते है वे उसे खु,श करने के लिये कई बार घिनोने कृत भी करते है जैसा कि प्राणियों की मन्दिरों में या पूजा स्थलों मे बलि देते है। एक बार मैं आसाम में घूमने गया था तो वहां मन्दिरों में बलि के प्रचनन को देख कर मैने एक पण्डित से पूछा कि यह बलि क्यों देते हो ———उसका जवाब था———मां के क्रोद्ध को शांत करने के लिये। मैं हैरान था कि उसे कैसे पता लग रहा था कि मां क्रोद्धित है। क्रोद्धित तो वह व्यक्ति होता है जो कि असहाय होता है, ईश्वर तो सर्व सम्पन्न है। फिर मान भी लिया जाये वह किसी एक व्यक्ति से क्रोद्धित है तो वह उसके स्थान पर किसी दूसरे प्राणी, जो कि उसका अपना ही बच्चा है, की जान लेकर कर क्यों शांत होगा। मुझे घूम–फिर कर ऐसा लगता है कि इन पण्डितों ने अपने स्वार्थ के लिये सारे हिन्दु समाज का बेड़ा र्गक किया हुआ है और वह ईश्वर को भी नहीं छोडते।

मनुष्य चाहता है कि वह प्यार करे और उसे भी प्यार मिले , तो यही रिश्ता हम ईश्वर से भी रखें। पर ईश्वर एक कदम आगे है वह कहता है न केवल मझे ही प्यार करो पर मेंरे प्राणियों से भी प्यार करो। जब हम ऐसा करने में सफल हो जाते है तो ईश्वर से सच्चा प्यार करने में सफल हो जाते है।कहते हैं एक पत्रकार को लेकर

कुछ अंग्रेज पादरी महर्षि रमण के पास पहुंचे। उनहोंने महर्षि रमण से कहा आपके शिष्य कहते हैं कि आप घटों ईश्वर से साक्षात्कार करते है? हम देखना चाहते हैं कि यह कैसे सम्भव है। महर्षि रमण ने कहा कि जो भी है आप सुवह मेरे साथ चलकर देख सकते है। महर्षि रमण सुबह की उपासना के बाद उन्हे लेकर जंगल की और चल पड़े और नदी किनारे एक झोपड़ी के अन्दर उनके साथ चले गये। वहां लेटे कुष्ट रोगी को प्रेम से उठाया। उसके शरीर पर औषधी युक्त तेल से मालिश की, फिर नहलाया व कपड़े बदले। चूलहा जलाकर दलिया बनाया। बड़े प्रेम से अपने हाथों से उसे खिलाया और बोले यही है मेरा ईश्वर के साथ साक्षात्कार। यह सत्य है ईश्वर से प्यार तभी सम्भव है जब हम उसके प्राणियों से प्यार करें।

यह भी सच्चाई है कि किसी भी चीज से तभी तक भय रहता है जब तक हम उसे जान नहीं लेते। उदाहरण के लिये हम अन्धेरे में जा रहें है और सामने सांप जैसी कोई चीज नजर आती है। स्वभाविक रूप में हम डर जाते है और वापिस भागने की सोचते है पर यदि पास में टोर्च हो और उस की रोशनी में पता लग जाये कि वह तो एक रस्सी थी तो सब भय दूर हो जाता है। इसी तरह ईश्वर से भी तभी तक भय रहता है जब तक हम इश्वर को जान नहीं लेते और अब ईश्वर को जान लेते हैं तो सब भय दूर हो जाता है और सिर्फ ईश्वर के लिये प्यार रह जाता है।

जिन्होने ईश्वर को जाना उन्होने ईश्वर का विवरण ऐसे दिया

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वान्तरयामी व सर्वशाक्तिमान, अजन्मा, न्यायकारी, दयालु, अनन्त, निर्वीकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वश्वर, सर्ववयापक, सर्वानतर्यामी, अजर,अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है

ओइम है जीवन हमारा, ओइम प्राणाधार है,

ओइम है करता विधाता, ओइम पालनहार है।

ओइम है दुख का विनाशक, ओइम सर्वानन्द है।

ओइम है बल तेजधारी, ओइम करूणाकन्द है।

ओइम है पापनाशक ओइम न्यायकारी है।

ओइम है पूज्य हमारा ओइम का पूजन करे,

ओइम के पूजन से मन अपना शुद्ध करें

ऐसे ईश्वर से केवल प्यार हो सकता है, भय नहीं ।इसलिये हमें ईश्वर से प्यार करना है न कि डरना है।

प्यार और विश्वास एक दूसरे के पूरक हैं इस लिये जब हम ईश्वर से प्यार करते हैं तो उस पर पूरा भरोसा भी करें। यही ईश्वर से प्यार है

Publisher & Printer Bhartendu Sood **Printed at** Umang Printer, Plot No. 26/3, Ind. Area, Phase-II, Chd. 9815628590
Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

Rama Beyond Name And Form

Swami Agnivesh

Religions have got universal values that are at the core of those religions. All religions also have, over time, acquired large areas of dogmas, rituals, superstitions, miracle mongering and what not because of the promotion of these aspects by some people who claim to be 'religious'.

But these aspects that depart from core philosophies and scientific reasoning are what cloud the true essence of religion. The manner in which religions, religious practices and their custodians have been organised and institutionalised, are far removed from what religions really mean to convey at their very core.

Mostly people practise rituals that are mind-boggling and superstitious; the real purpose of religion is lost - which is, to promote love, peace and harmony, among all beings. Religion is meant to make us better human beings, live in harmony with nature and with other beings, and that's how we ought to commune with our Creator.

That is why I say that the Sabarimala and Ayodhya issues are far removed from real religion. Ekam sat vipra bahuda vedanti -'that which exists is One; sages call it by many names'.

If all are One, then Creator, Sustainer, are One.

Attributes of nirgun and sagun cannot be associated with the Lord of the Universe who is niraakaar.

And niraakaar cannot become saakaar. That would be completely beyond what the Vedas say, Na tasya pratima avasti - No figure or deity can claim to represent the One, any such representation cannot be Supreme, says the Yajur Veda, for the Supreme Divine transcends all forms.

भूत प्रेत की हानिकारक कल्पना

डॉ संजय कुमार

कुछ दिन पहले मैं एक धार्मिक हिन्दू से बात कर रहा था। हमारी चर्चा का विषय धर्म, परमेश्वर और अलग अलग मान्यताओं के बारे में था कि इसमें भिन्नता कैसे हो सकती है। बातचीत में उसका एक प्रश्न था 'यदि आप परमेश्वर पर विश्वास करते है तो आप भूत और जादू में भी यकीन करते होंगे'।

बुद्धिमान वैज्ञानिक ढूंढने पर भूत को नहीं खोज पाते परन्तु भयभीत मनुष्य उसे घर में भी देख लेता है। दुर्भाग्य से बाल कहानियों की पत्रिकाएँ जैसे नन्दन, चन्दामामा और डायमण्ड कॉमिक्स इस तरह की अवैज्ञानिक जानकारियां परोसते हैं कि बालमन पर बहुत कुप्रभाव पड़ता है। कादम्बरी, यन्त्र मन्त्र तन्त्र, सच्ची कहानियाँ आदि अनेक पत्रिकाएँ इस अंधविश्वास को बढ़ावा देती हैं। इस सम्बन्ध मे बहुत सी फिल्में भी बनी हैं। टेलीविजन के धारावाहिक भी बने हैं। पता नहीं सेंसर बोर्ड कभी इन पर कंटोल क्यों नहीं करता। हमारी पाठ्य पुस्तकों मे निरर्थक जानकारी भरी पड़ी है परंतु भूत प्रेत जैसी मान्यता पर कोई विवरण नहीं है।

अमेरिका के प्रायः किसी युवा के सामने यदि आप 'जादू' शब्द बोलते हैं, तो सबसे पहले उनके

मन में जो छवि उभरेगी वह हैरी पॉटर की होगी। एक किताब, उपन्यास, फिल्म या जो भी अवास्तविक हो और जिसे काल्पनिकता से मनोरंजन के लिए ही बनाया गया हो। यद्यपि अमेरिका मे भी मैजिक हीलर ईसाई मिशनरी हैं, वे अपना स्टेज शो करके जादुई इलाज का दावा भी करते हैं, पर 80 प्रतिशत से अधिक अमेरिकन उन पर विश्वास नहीं करते।

भारत में थोड़ी भिन्नता है। ऐसा नहीं है कि बच्चे ही भूत और जादू पर विश्वास करते हैं, बल्कि

वयस्क भी मानते हैं। फलस्वरूप यह डर सिर्फ बच्चों में ही नही अपितु वयस्कों में भी है। हमेशा की तरह धर्म ने लोगो में इस डर को स्थापित कर दिया है क्योकि यह डर लोगों को नियंत्रित करने में मदद करता है। भूतों की कहानियां यह भी बताती हैं कि ऐसे खतरे आये तो धर्म यह सलाह देता है तब अनुष्ठान व कर्मकाण्ड आदि करना चाहिए। यह पडिंतो की कमाई का बड़ा साधन है। दुर्भाग्य से वयस्कों ने यह डर अपने बच्चों को भी सिखा दिया है।

अधर्म गुरुओं ने भी इसे बढ़ावा दिया है। भारत मे अधिकांश धर्मगुरुओं की इस विषय मे कोई स्पष्ट मान्यता नहीं है। जब भी पूछिए वह प्रश्न को टाल जाते हैं। आर्य समाज को छोड़कर शायद ही कोई मत हो, जो जीवात्मा और परमात्मा को तो मानते हों, परंतु भूत प्रेत को नहीं।

माता–पिता अपने दरवाजे पर कोई वस्तु लटका देते हैं, जिससे बुरी आत्मा प्रवेश न कर पाये और वह बच्चों को यह सिखाते हैं कि हमारे तकिये के नीचे एक चाकू है जिससे भूत डरते हैं। जब आप अपने बच्चे को यह बताते हैं कि भूतों के खिलाफ हमें क्या करना चाहिए, तब वास्तव में आप बच्चे को प्रोत्साहित कर रहे होते हैं कि भूत सच में होते हैं।

यह तथ्य है और बताने में और भी बुरा लगता है कि उच्च शिक्षित लोग भी इस भय और भ्रम में रहते है। वे अपने बच्चों को विज्ञान व चिकित्सा के बारे में बताते हैं, पर साथ ही वह उनमें डर भी सिखाते हैं। अपने बच्चों को किसी काम से रोकने के लिये वे यह सिखाते है कि यह मत करो वरना भूत आ जायेगा! वे अपने बच्चों इस बात से भयभीत करते है कि अगर वह अच्छा व्यवहार नही करेंगे तो उन्हें उस गोदाम में बन्द कर दिया जायेगा, जिसमें एक भूत रहता है। यहां तक कि वो उस भूत का एक डरावना नाम भी खोज लेते है जिससे कि वे अपने बच्चों को डरा सकें। आज भी लोग ऐसी बातों पर विश्वास करते हैं और अपने बच्चों को भी सिखाते हैं। ऐसी प्राचीन कहांनियों से आप एक ऐसी विकलांग पीढ़ी पैदा कर रहे हैं, जो उनमें झिझक वअनावश्यक भय को जन्म देती है।

महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश द्वितीय सम्मुलास में लिखते हैं– 'जो–जो विद्या, धर्मविरुद्ध भ्रान्तिजाल में गिराने वाले व्यवहार हैं उनका भी उपदेश कर दें जिससे भूत प्रेत आदि मिथ्या बातों का विश्वास न हो।'

गुरोः प्रेतस्य शिष्यस्तु पितृमेधं समाचरन्।
प्रेतहारैः समं तत्र दशरात्रेण शुद्धयति।।मनु०

अर्थ– जब गुरु का प्राणान्त हो तब मृतक शरीर जिसका नाम प्रेत है उसका दाह करनेहारा शिष्य प्रेतहार अर्थात् मृतक को उठाने वालों के साथ दशवें दिन शुद्ध होता है। और जब उस शरीर का दाह हो चुका तब उसका नाम भूत होता है अर्थात् वह अमुकनामा पुरुष था। जितने उत्पन्न हों, वर्तमान में आ के न रहें वे भूतस्थ होने से उनका नाम भूत है। ऐसा ब्रह्मा से लेके आज पर्यन्त के विद्वानों का सिद्धान्त है परन्तु जिसको शंका, कुसंग, कुसंस्कार होता है उसको भय और शंकारूप भूत, प्रेत, शाकिनी, डाकिनी आदि अनेक भ्रमजाल दुःखदायक होते हैं। जब कोई प्राणी मरता है तब उसका जीव पाप, पुण्य के वश होकर परमेश्वर की व्यवस्था से सुख दुःख के फल भोगने के अर्थ जन्मान्तर धारण करता है। क्या इस अविनाशी परमेश्वर की व्यवस्था का कोई भी नाश कर सकता है? अज्ञानी लोग वैद्यक शास्त्र वा पदार्थविद्या के पढ़ने, सुनने और विचार से रहित होकर सन्निपातज्वरादि शारीरिक और उन्मादादि मानस रोगों का नाम भूत प्रेतादि धरते हैं।

स्वामी दयानन्द का यह सन्देश कितना व्यावहारिक है। टीवी चैनल, नाटक, फिल्मों आदि ने भूत जैसे अंधविश्वास को खूब बढ़ावा दिया हैं। आइये हिन्दू समाज को भूत आदि अन्धविश्वास से बचाने के लिए इस सन्देश को आगे ले जायें।

Learn how to walk

A walk should never have a specific purpose. Rather than having a destination, you should simply immerse yourself in the beauty of the walk itself. Second, you must never take your worries with you on the walk. Leave them at home, for if you don't, they will become even more deeply rooted in your mind by the end of the walk. And finally, be fully aware.

Train yourself to pay complete attention to the sights, sounds and smells.

Study the shape of the leaves on the trees. Observe the beauty of the clouds and the fragrance of the flowers. As he concludes: "The world, after all, is not so unendurable, when a person gets a chance to look at it and smell it and feel its texture and be alone with it. This acquaintance with the world — this renewal of the magical happiness and wonderment which you felt when you were a child — such is the purpose of taking walks."

EDITORIAL

Free your mind from biases and think over why China is +3.5 and India -23%

Eleanor Roosevelt had said, "Great minds discuss ideas; average minds discuss events; small minds discuss people." Today when the entire nation and media is obsessed with the death of the film actor Sushant Sigh Rajput and standoff between another Bolywood actor Kangna and Shiv Sena, it is not difficult to judge in which category we have been put by our propaganda media, largely controlled by the government and the BJP. I am really shocked that there are very few stories which have come up to analyse why China is +3.5 and India -23% in the matter of 1st quarter GDP growth especially when there

would have been countless analysis, that also threadbare, if India had lost a cricket series.

The degree of fear in our minds can be gauged from the fact that we are afraid of even admiring China's plus points. It has become a sin in our country to admire Xi Jinping or Imran Khan for their good work. For example Imran has managed Covid-19 far better than our PM but if you say this, maximum chances are that you will be labeled as anti-national. Then we say that Article 19 of our Constitution gives us the right to express our opinion. This is all a humbug. Reality is different. If you criticize Modi, your article will be mailed back with regret. If right to opinion is trampled upon in some corner of the world, our leading newspapers will come out with editorials but will not practice when it comes to publishing anti establishment views.

Agreed China is our enemy number two since the first place is permanently reserved for Pakistan since 1947. This is what we are taught right when we get to know a bit of geography and about the countries around us. I will not say neighbours because neighbourhood concept is totally missing in the dictionary of our country otherwise we

would not have all neighbouring countries including Nepal hostile to us. This is the biggest gift of the Modi Government to us. But, all said and done analyzing and admiring the positive points of the opponents is not a sin rathr it helps you to come out better when the things matter most. It is with this spirit I have taken up the topic why China is +3.5 and India -23% in the matter of 1st quarter GDP growth. We were in the same situation, rather China was the first to be attacked by this virus, which can be called the originator. To me reasons are,

China is led by a person who understands the economy and its narratives.. We are led by a leader who has failed to display understanding of economy. Introduction of Demonetization, half cooked GST and the largest and toughest lock-down to control the epidemic, when it was least desired are the few examples which exhibit that he never bothers about weighing the implications of his decisions on the economy. All these steps have ruined our economy which until 2014 was constantly on rise under Dr Manmohan Singh. What is still worse, he never owns the repercussions of his wrong moves.

Our leader enjoys sensationalism-----announcing demonetization in the middle of night and country wide lockdown at four hour notice are two examples. Our PM wants to be a World No-1 for all wrong reasons.He wanted to earn name and fame for having announced strictest and toughest lock down in the world , is one such example. Look at the state of the mind to which we have been degraded by our leadership. Nation and its leaders celebrated the purchase of Rafal from France whereas it is the France who should be in a celebratory mood after having successfully done an arms deal even in this period of deep recession. Our PM is a world class orator. China's president is a man of actions and speaks less. Our PM knows to win elections , China's president provided growth even in the challenging times. How beautifully he controlled the economy as well as the virus. Our PM does chest thumping even without having any justified reason for that,(India helped 150 countries during epidemic) China's president even after having stupendous success in all areas be it a factory production, innovation (5 G), military might , concentrates on improving further. Have you ever heard Xi Jinping shouting from the top of the house that we have been extraordinary, which they are indeed after having shown how they could control the spread of virus and achieve it without damaging their economy.

Priorities- China takes care of the people associated with manufacturing by providing all incentives. India takes care of its Babus and large force of Govt employees. People associated with manufacturing died on roads and committed suicides.

Work culture-----This can be appreciated only when you spend time in China. Their commitment , sense of devotion to their duty has very few parallels , maybe Japan, Korea and Vietnam can match. At least we Indians, always thinking about our rights are miles away from them.

They are physically and mentally far healthier than us, which can be attributed to their being six times richer but they became richer only because they work hard and love their work .

But, the most important factor is the first one which affects the remaining four. Once the economy is strong all other factors travel from it, including military might.

Solution

BJP has an absolute majority in Lok sabha .We have total vacuum when it comes to opposition therefore no change is possible till 2024 unless heaven's fall.. Now when it's leader has miserably failed to give the economy the much required push which a developing country with rising number of educated youth needs badly, they must think of having a new leader as is the practice in the corporate world. If the CEO fails, a new CEO is appointed. BJP has to shun this thinking that Modi is indispensable and they have no man to replace him. It is not being good or bad, it is just the question of being able to deliver in a particular position. Modi was good as the CM but the narratives at this position of PM were quite different. Here, the critical factors in a growing and multi religion country are to be able to push up the economy, social cohesion and bi-lateral ties with the other countries, where he failed. For a minute, even if he is indispensable, make him the party President. The book cannot be judged from its cover.. The Congress party in 1992 brought PV Narsimha Rao when he had almost retired from politics. He proved to be the one of the best PMs country had, who kept low profile and allowed his Ministerial colleagues to work in the spirit of first among equals (Dr Manmohan Singh) to work are far better than leaders like Modi who talk big and deliver little.

If BJP does not act soon, the economy is already ruined but the party will also become non-existent by 1925.

उदबुध्यसवागने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सँसृजेथामयं च।
अस्मिनत्सधस्थे अध्युतसस्मिन विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ।।

O lusturous God kindle the fire with in us that may burn my evils and give me the strength to make sacrifice for the meek and the weak to save them from the oppressors.

यह मन्त्र हम हवन करते हुये अग्नि प्रज्जवलित करते हुये बोलते है।

हे अग्नि ; यहां ईश्वर को अग्नि कह कर सम्भोदित किया गया है मेरे अन्दर ऐसी ज्वाला प्रज्वलित करें जो कि मेरी सारी बुराईयों को भस्म कर दे और मुझे जो कमजोर हैं, अभाग्य हैं, उन्हें बल प्रदान करने के लिये, उनके लिये त्याग करने की, दूसरों के शोषण से बचाने की शक्ति दें।

कहने का अभिप्राय यह है कि हमारे अन्दर कल्याणकारी कार्य करने की प्रेरणा भी ईश्वर की कृपा से ही आती है यदि हम ईश्वर भक्ति का ठीक स्वरूप समझ गये हैं व ईश्वर भक्ति करते रहते हैं तो एक समय आयेगा जब आप कल्याणकारी मार्ग के पथिक बन जायेंगे।

मनुष्य की योनी ही इस लिये मिलती है ताकी मनुष्य संसार के रचयिता परमात्मा को पा सके। परन्तु इस के लिये आवश्यक है कि हम अपने मिथ्या अंहकार, वासनाओं को त्याग कर अपने अन्दर ही झांकें।

मनुष्य का तब तक परमात्मा के साथ मेल सम्भव नहीं जब तक वह इन पांच शत्रुओं––काम, क्रोद्ध, लोभ, मोह और अंहकार से घिरा हुआ है। इन को दूर करने का एक ही उपाय है। उस निराकार की उपासना, निष्काम सेवा और सब प्राणियों से प्यार और करूणा। व अपने में विनम्रता, संवेदना, सहनशीलता व संतोश भाव व सब के लिये प्यार पैदा करना।

प्राप्त ज्ञान को जीवन में उतारना अधिक अनिवार्य है

सीताराम गुप्ता

एक सेमिनार में एक पुराने मित्र मिल गए। दषकों बाद मिले थे। ख़ूब बातें हुईं। कहने लगे आपके आर्टिकल नियमित रूप से पढ़ता हूं पर संक्षेप में कोई ऐसा प्रभावषाली उपाय या सूत्र बतलाइए जिससे जीवन में हर प्रकार की गुणवत्ता में वृद्धि संभव हो सके। मुझे निरुत्तर करने के लिए काफी था ये प्रष्न। काष ऐसा कोई रेडीमेड सूत्र हम सब के हाथ लग जाए जिससे हमारा जीवन बदल जाए, अच्छा हो जाए। मैंने कहा कि मेरे आर्टिकल पढ़ना छोड़ दो। कहने लगे छोड़ दूंगा पर ये तो बताओ कि उसके बाद करना क्या है। ''करना कुछ नहीं है बस झूठ बोलना, चोरी करना और जो भी मिले उसे धोखा देना षुरू कर दो जीवन में सफलता और समृद्धि का द्वार खुल जाएगा, '' मैंने कहा।

मित्र गंभीर हो गए और बोले, '' ये कैसा उपाय हुआ? झूठ बोलना, चोरी करना और लोगों को धोखा देना तो सरासर गलत ही नहीं हमारे चारित्रिक विकास में सबसे बड़ी बाधा भी है।'' '' यदि झूठ बोलना, चोरी करना और लोगों को धोखा देना गलत है तो फिर सही क्या है?'' मैंने पूछा। उन्होंने कहा कि झूठ न बोलना, चोरी न करना और लोगों को धोखा न देना ही सही है। मैंने पूछा कि क्या आज से पहले आपको पता था इन सब बातों का? उन्होंने बताया कि वो ही नहीं सब लोग जानते हैं ये बातें तौं सब जानते हैं कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है। तो फिर हमारे साथ प्रॉब्लम क्या है? हममें से अधिकांष लोग जानते हैं कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है। यह भी जानते हैं कि अच्छा कार्य करना चाहिए और बुरा कार्य नहीं करना चाहिए। फिर भी हम और अच्छे बनने के प्रयास में लगे रहते हैं। इसके लिए अच्छे व्यक्तियों का साथ ढूंढते हैं। अच्छी–अच्छी पुस्तकें पढ़ते हैं। धर्म, अध्यात्म और नीति विशयक ग्रंथों का अध्ययन करते हैं।

आध्यात्मिक विकास के लिए किसी सिद्ध पुरुश को खोजकर उसे गुरू बनाते हैं। दीक्षा लेते हैं। नियमित रूप से सत्संग में जाते हैं। जीवन की गुणवत्ता को सुधारने के लिए आजकल तो अनेक मोटिवेषनल सेमिनार और वर्कषाप भी उपलब्ध हैं। निस्संदेह हम अपने आप को पहले से बेहतर जानने–समझने लगे हैं। अपने गुणों–अवगुणों से परिचित हो जाते हैं तथा साथ ही अपने आप को अच्छी तरह व्यक्त करने की योग्यता का विकास भी कर लेते हैं लेकिन फिर भी जीवन की गुणवत्ता में सुधार क्यों नहीं होता? हम जो सीखते हैं कई बार उसका उद्देष्य दूसरों पर प्रभाव डालना मात्र होता है। हमने जो सीखा होता है उस पर घंटों चर्चा करते रहते हैं। इससे कुछ लोग प्रभावित भी हो जाते हैं लेकिन हम वहीं के वहीं रहते हैं। कई बार कुछ नया सीखने अथवा जानने के बाद हममें सकारात्मक परिवर्तन की बजाय अहंकार की मात्रा अवष्य बढ़ जाती है। हम स्वयं को दूसरों से श्रेश्ठ समझने की भूल और करने लगते हैं। हमें इस चीज से बचने का प्रयास करना चाहिए।

यदि हम वास्तव में जीवन की गुणवत्ता में सुधार चाहते हैं तो हमें अच्छी बातों के बारे में ज्यादा जानने–समझने की प्रक्रिया को परिवर्तित करना चाहिए। अच्छी पुस्तकें पढ़ना, गुरू बनाना, दीक्षा लेना, सत्संग करना, प्रेरक सेमिनार व वर्कषाप करना इन सब बातों

की एक सीमा होनी चाहिए। हमारे पास समय की भी सीमा होती है। हम सारा समय सीखने में ही लग देंगे तो सीखी हुई बातें कम काम आएंगी? हमें अच्छी बातों के बारे में ज्यादा जानने की बजाय अच्छी बातें करनी चाहिएं। जो पहले से जानते हैं कई बार वो पर्याप्त से भी ज्यादा होता है। यदि उस पर नहीं तो जो अभी हाल ही में सीखा है उसे ही व्यवहार में ले आइए। सच बोलने या ईमानदारी पर कितनी किताबें पढ़ेंगे? कितने सेमिनार करेंगे? कितने सत्संग करेंगे? कोई अंत नहीं है। दूसरों को प्रभावित करने के लिए अच्छी सूक्तियां सुनाने की बजाय इन सूक्तियों को अपने व्यवहार में लाना होगा। व्यवहार में परिवर्तन करना होगा, अच्छी आदतों को अपने व्यवहार में लाना होगा। उसे उत्तम बनाना होगा। तभी ज्ञान सार्थक हो सकेगा।

बुरी बातों की तरह ही अच्छी बातों की भी तो सीमा नहीं होती। केवल एक अच्छी बात, भाव या आदत चुनकर जीवन में उतार लीजिए। सच बोलना है तो सच को जीवन में उतार लीजिए। षब्दों में नहीं व्यवहार में ले आइए। सच बोलना है हर हाल में। सच बोलेंगे तो झूठ नहीं बोलेंगे। सच बोलेंगे तो बेईमानी भी नहीं करेंगे, दूसरों को धोखा देना भी संभव नहीं होगा, बहानेबाजी, पाखण्ड करने की जरूरत भी नहीं रह जाएगी। एकै साधे सब सधै। एक के साधने से सभी की साधना हो जाएगी। एक अच्छी आदत दूसरी सभी अच्छी आदतों का विकास कर देती है और एक बुरी आदत असंख्य बुरी आदतों का, इसमें संदेह नहीं। अतः सही आदत या आदतों के चयन में ही निहित है हमारा वास्तविक विकास।

जीवन में सच को या अन्य किसी एक सकारात्मक बात, भाव या आदत को साध लीजिए बाकी सब सकारात्मक बातें, भाव, आदतें या मूल्य स्वयं सध जाएंगे, जीवन की गुणवत्ता में सुधार आ जाएगा। साथ ही फालतू चीजें या आदतें छूट जाने से समय की बचत भी होगी। उस समय का सदुपयोग अपने जीवन मूल्य को लगातार दृढ़तर करते रहने में लगाकर उसे और सुदृढ़ कर पाएंगे, जीवन की गुणवत्ता में और वृद्धि कर सकेंगे। व्यक्तित्व विकास का ये चक्र एक बार निर्मित हो गया तो पीछे मुड़कर नहीं देखना पड़ेगा। जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि कहिए या आध्यात्मिक विकास या आत्म विकास इन सब के लिए यही एकमात्र प्रभावषाली उपाय या सूत्र है।

निश्कर्श यही निकलता है कि जानने मात्र से कुछ नहीं होता। हमें जोर की भूख लगी हो और हमारे सामने बहुत सारी खाने की चीजें भी रखी हों लेकिन जब तक हम उन्हें खाएंगे नहीं हमारा पेट नहीं भरेगा। कितना ही पौश्टिक भोजन क्यों न हो बिना उसे खाए न तो हमारी भूख ही मिट पाएगी और न हमारा स्वास्थ्य ही अच्छा बन पाएगा। हम जानते हैं कीचड़ में पैर रखने से हम गंदे हो जाएंगे लेकिन यदि कीचड़ से बचने का प्रयास नहीं करेंगे तो जानने मात्र से हम गंदगी से नहीं बच सकेंगे। इसी प्रकार से हमारे जीवन में किसी भी प्रकार की गुणवत्ता में वृद्धि अथवा व्यक्तित्व विकास तभी संभव है जब हम सीखी हुई अच्छी बातों को अपने जीवन में लागू भी करें। हमें अच्छी बातों को सीखने के साथ–साथ ये अवष्य सीखना चाहिए कि इन अच्छी बातों को व्यवहार में कैसे लाएं? स्वाभाविक है कि हम एकदम से बड़ा परिवर्तन नहीं कर सकते इसलिए किसी छोटे से सकारात्मक परिवर्तन से प्रारंभ कर दें और आज ही कर दें।

ए.डी.–106–सी, पीतमपुरा,

दिल्ली–110034

फोन नं. 09555622323

Email: srgupta54@yahoo.co.in

Don't educate your children to be rich.
Educate them to be Happy.
So when they grow up they will know the value of things not the price.

Reading about his life is like reading an epic

SH Kapadia - Former Chief Justice of India

- He is one of the finest judges and administrators
- He has redefined judgeship

"A judge must inevitably choose to be a little aloof and isolated from the community at large. He should not be in contact with lawyers, individuals or political parties, their leaders or ministers unless it be on purely social occasions," Kapadia said while delivering the MC Setalvad Memorial lecture on Judicial ethics in April 2011.

Chief Justice Kapadia will be remembered for some of the landmark judgements he delivered. And the way he lived as a judge will never be forgotten. It can only be called exemplary. In a now famous and widely quoted letter that he wrote to former Justice VR Krishna Iyer, Kapadia said: "I come from a poor family. I started my career as a class IV employee and the only asset I possess is integrity..."

Early days

- The odds were stacked against Kapadia at his birth in 1947 because unlike the illustrious Parsis of Bombay, his father had grown up in a Surat orphanage and had worked as a lowly defense clerk. His mother Katy was a homemaker. The family could barely make ends meet but that did not weaken their robust values.

"My father taught me not to accept obligations from anyone, and my mother taught me the ethical morality of life," Kapadia recalled at a Bombay Parsi Panchayet felicitation. Kapadia would walk down Narayan Dhabolkar Road in Mumbai, past the Rocky Hill flats, where a number of judges lived, and dream that one day he would progress from being an advocate to becoming a judge and have the honour of living in those very same salubrious surroundings,

Many years later, when Kapadia became a judge at the Bombay High Court, he always sat in court room number three on the ground floor, which perplexed many because as judges rose in seniority they also moved up the courthouse building. Kapadia revealed the reason why he was fond of the room when he was invited to tea at the Bar just before taking over as the Chief Justice of the Uttaranchal High Court in 2003. Early in his career as a low-grade employee, he used to end up at the Fountain area near the court for work. He didn't have anywhere to go to spend his lunch break. For three years lunch often used to be a small cone of roasted chana (gram) and courtroom number three was the place to relax because it let in good breeze Kapadia began his career as a grade four employee with Behramjee Jeejeebhoy where his main job was to deliver case briefs to lawyers.

Kapadia studied law and enrolled at the bar. By that time he had a keen grasp of issues related to land and revenue and began taking up such cases. As a junior lawyer, he quickly gained a reputation for his preparation and ability to cite authority while arguing. Kapadia then joined Feroze Damania, a feisty labour lawyer reputed to be partial to poor and marginalised people.

In 1982, Kapadia argued a case for people living in Ghatkopar, a suburb in Mumbai.. Kapadia fought the case which resulted in a landmark judgement laying down the principle that governments cannot invoke summary eviction laws to throw out people when there is a genuine dispute on the title.

"It was not about money. He was genuinely interested in the welfare of marginalised people," a colleague who worked with him at Damania's offices told Forbes India. He did not wish to be named.

"What we need today in India as far as the judges are concerned is a scholastic living," Kapadia said in December 2008. Delivering the JK Mathur memorial lecture in Lucknow, Kapadia went on to define the context of modern day justice and the legal profession. In that speech he said how important it was for judges to understand the various concepts in different fields, including economics and accountancy. Kapadia himself is a qualified accountant and has vast knowledge of economics.

A Mumbai lawyer who knows him from the time Kapadia was a lawyer and later judge, says that he has evolved into a complete jurist. Yet, the Chief Justice has not stopped learning.

Unshakeable Integrity

There are two qualities of Justice Kapadia that no one disputes— integrity and compassion.

"His humble beginnings are reflected in his outlook and judgements," says senior lawyer Soli Sorabjee. "A litigant may feel disappointed if he loses the case but no litigant goes back [from Kapadia's court] feeling he was not fairly or fully heard."

In his pursuit of flawless integrity, Kapadia has hermetically sealed himself. He even said in a speech that judges and lawyers should work like a horse and live like a hermit. When Forbes India sought to interview him for this profile, the CJ's office said the strict code of conduct binding Supreme Court judges does not allow him to agree. Kapadia's personal code of conduct is more severe. Retired Justice VR Krishna Iyer told Forbes India that he had gathered from his colleagues that he was too dignified to even meet other judges, rarely meets anybody at random and when he speaks he is taciturn.

Kapadia does not accept even official invitations if they fall on a working day. He once rejected an invitation to represent India at a conference of the Commonwealth Law Association in Hyderabad because it fell on a working day. On the first day in office as CJI, he cleared 39 matters in half an hour. Kapadia has practically dedicated his life to the profession, rarely taking holidays even.

During the first summer holidays after he became chief justice, Kapadia is said to have come to office everyday to streamline the SC registry.

According to several lawyers, the registry had deteriorated into a corrupt office where 'bench hunting' was common. Bench hunting is gaming the allocation process to make sure that a

certain matter appears before a certain judge who the lawyer thinks will rule in a particular way. Kapadia has put an end to it and is now said to review the day's board of case listings and pull up the SC staff if he finds something amiss.

The CJ has also stopped out-of-turn mentioning of cases to be taken up urgently, which has caused some consternation among lawyers

The Indian justice system had drawn a lot of flak over the past few years after the integrity of several past and sitting judges was questioned. But Kapadia defended the system in his Law Day speech last November.

"I am an optimist. I do not share the impression that judicial system has collapsed or is fast collapsing. I strongly believe and maintain that with all the drawbacks and limitations with shortage of resources and capacity, we still have a time-tested system," he said. He also said that the backlog of cases is not as huge as is made out to be. "Seventy-four percent of the cases are less than five years old," he said and added that the focus is on quickly disposing of the rest of the cases.

Kapadia has certainly restored the confidence and pride in the Supreme Court of India.

By the time Kapadia hanged up his cloak and collar on September 29, he left an indelible mark on India's judicial history. Former Justice VR Krishna Iyer told Forbes India: "While I have seen during the last 97 years of my life among good judges with great credentials, there was hardly anyone to compare with Kapadia the like of which no eye had seen, no heart conceived and no human tongue can adequately tell."

FEED BACK

BHARTENDU SOOD

EDITOR

I have greatly liked your issue of VEDIC THOUGHTS-JUNE-2020. I wish to thank you for your article "Editorial" and "sampadkiey" You have very nicely brought out the clear details on Lockdown.

Thanks once again.

Regards,
Sateesh Dadwal
#453/2, Sector 44-A
Chandigarh
Cell: 9478024005

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म् ।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

RITA JAIN & CHARU JAIN DONATED MILK IN MEMORY OF HARISH JAIN

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552,
Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

Anu Mahajan

Dheeraj Chopra

Neelam Khurana

Mrs Ashutosh Sood

Mr & Mrs Shalini Nagpal

Mrs Vinod Bala donated ration to bal Ashram

Shalini Nagpal D/o Dr Saroj Miglani performing Havan with the children

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870